प्रख्यापन

"जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में परम्परा और आधुनिकता"

यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो एम् फिल (हिन्दी) के लघु प्रबन्ध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर या अन्य किसी उपधी के लिए प्रस्तुत नहीं की गई है।

सातारा

दिनांक - 30-11-1990

(भानुदास भिकाजी आगेडकर)

हस्ताक्षर

प्राक्कथन

मानव प्रकृति का सबसे बड़ा बरदान है और साहित्य उसकी अनुपम कला-कृति है। साहित्य परम्परा और आधुनिकता का वाहक है। अन्य साहित्य-विधाओं की अपेक्षा नाटक अधिक संस्कारधाम विधा हैं क्यों कि उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध रगमंच से है। आजकल साहित्यालोचन मे परम्परा और आधुनिकता का समेट लिया जाता है क्योंकि किसी न किसी रूप में साहित्य में परम्परा और आधुनिकता दिखाई पड़ती है। श्री जगदीशचन्द्र माथुर हिन्दी के प्रतिथयश नाटककार हैं। उनके नाटकों का अध्ययन करन से यह प्रतीत होता है कि उनके नाटका में भी परम्परा और आधुनिकता के दर्शन होते हैं।

प्रबन्ध का विषय **"जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में परम्परा और आधुनिकता"** है। अभी तक लघु-शोध-प्रबन्ध की दिक्षा में माथुरजी के नाटकों पर "परम्परा और आधुनिकता क रूप में शोधकार्य नहीं हुआ है। अत: अध्ययन के अन्तर्गत माथुरजी के प्रतिनिधि पाँच नाटकों को लिया गया है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध सात अध्यायों म विभाजित है :-

अध्याय - 1 :- "परम्परा और आधुनिकता" विषय-प्रवश संबधी है जिसके अन्तर्गत परम्परा और आधुनिकता का अर्थबोध और अर्थविस्तार विशद किया गया है। साथ ही परम्परा का स्वरूप-निर्धारण तथा परम्परा और अतित परम्परा और सम्प्रदाय, पम्परा और रूढिप्रियता पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त आधुनिकता का स्वरूप-निर्धारण एव आधुनिकता और इतिहास-बोध आधुनिकता और यथार्थ, आधुनिकता और मूल्य-दृष्टि आधुनिकता और समसामयिकता तथा परम्परा और आधुनिकता का पारस्परिक सम्बन्ध स्पष्ट करते हुए साहित्य में परम्परा और आधुनिकता पर सक्षिप्त विवचन किया गया है।

अध्याय - 2 :- जगदीशचन्द्र माथुर:, जीवनी व्यक्तित्त्व अैर कृतित्त्व म माथुरजी का जीवनवृत्त उनके संस्कार और शिक्षा-दिक्षा कला के प्रति उनकी रूचि, साहित्य क्षेत्र म उनका पदार्पण, उनका साहित्यिक व्यक्तित्त्व, उनका कार्य-क्षेत्र तथा उनकी साहित्य सम्पदा पर प्रकाश डाला गया है।

अध्याय - 3 :- जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में प्रतिबिम्बित "परम्परा": इस आध्याय में माथुरजी क नाटको मे प्रतिबिम्बित "परम्परा" को सामाजिक राजनीतिक आर्थिक, धार्मिक तथा आचार-नीति के परिप्रेक्ष्य में विशद किया गया है।

अध्याय - 4 :- जगदीशचन्द्र माथुर के नाटका में मिथकीय नूतन उद्भावनाएँ : इस अध्याय में मिथक का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसकी अवधारणा, उसका साहित्य और नाटक में चित्रण तथा माथुर जी के दो नाटकों - "कोणार्क" और "पहला राजा" में मिथक की नूतन उद्भावनाएँ कैसी अभिव्यक्त हुई हैं -

सविस्तार विवेचन किया है।

अध्याय – 5 :– जगदीशचन्द्र माथुर के नाटको मे प्रगतिशील चिन्तन और लोक–जीवन की नयी व्याख्या: इस आध्यायमें माथुरजी के नाटकों मं अभिव्यक्त प्रगतिशील चिन्तन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक परिप्रेक्ष्य में आँका गया है साथ ही माथुरजी के नाटकों में प्रतिबिम्बित लोकजीवन की नयी व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास है।

अध्याय – 6 :– जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों मे नव्य–नाटय–शिल्प: इस आध्याय मे माथुरजी के नाट्य–शिल्प के अन्तर्गत जो नये प्रयाग किये है उनकी सोदाहरण चर्चा की गयी हैं। अध्ययन के अन्तर्गत "सूत्रधार और नटी" के नव्य प्रयोग, "आधुनिकत अन्योक्ति" का मंचीय रूप "पहला राजा" प्रतीक–पात्र और खण्डित व्यक्तित्व अँकन, भाषा और संवाद के नव्य प्रयोग, रंगमंच के नये आयाम – इन विषायों को विवचित किया गया है

अध्याय – 7 :– समापन इस अध्याय में जगदीशचन्द्र माथुरजी के नाटकों का परम्परा और आधुनिकता के आधार पर समन्वित मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत लघु–शोध प्रबन्ध का अध्ययन श्रद्धय गुरूवर डॉ. गजानन शंकर दुर्वे, हिन्दी विभागाध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा के निर्देशन म किया गया हैं। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद उन्होनें हर समय बड़ी तत्परता और तन्मयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है। साथ ही डॉ. दुर्वेजी के विशाल समृद्ध ग्रंथालय से भी मैं पूरी तरह स लाभान्वित हो चुका हूँ। अत: मैं उनका हृदय से ऋणी हूँ।

प्रस्तुत शोध–कार्य में मुझे प्रो. टी आर पाटीलजी की विशेष सहायता प्राप्त हुई है, साथ ही डॉ. व्ही.के. मोरेजी, प्रा. डि.के. कदम, प्रो. ए.ए. पोतदारजी का भी प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। लाल बहादुर शास्त्री महाविद्यालय, सातारा, छत्रपती शिवाजी कॉलेज, सातारा, आर्टस् साईन्स एन्ड कॉमर्स् कॉलेज, इचलकरंजी आदि संस्थानों के ग्रंथालयों के पदाधिकारियों का मैं आभारी हूँ। प्राचार्य आर.एम. चिटणीसजी का भी मैं ऋणी हूँ। ज्योति इलेक्ट्रानिक्स् टायपिंग सेंटर, कराड के श्री और श्रीमती नाचिडकरजीने टंकलेखन का कार्य बड़ी तत्परता से किया। अत: मैं उनका कृतज्ञ हूँ।

शोधकार्य में मुझे जिन ग्रंथों से सहायता मिली उन समस्त गन्थकारों का भी आभारी हूँ।

(भानुदास भिकाजी आगेडकर)

सातारा

दिनांक – 30–11–1990

जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में परम्परा और आधुनिकता

		पृष्ठ क्रमांक
अध्याय – 1 :	परम्परा और आधुनिकता	8 - 31
अध्याय – 2 :	जगदीशचन्द्र माथुर के जीवनी व्यक्तित्व और कृतित्व	32 - 58
अध्याय – 3 :	जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में प्रतिबिम्बित "परम्परा"	59 - 74
अध्याय – 4 :	जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में मिथकीय नूतन उद्भावनाएँ	75 - 105
अध्याय – 5 :	जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में प्रगतिशील चिन्तन और लोकजीवन की नयी व्याख्या	106 - 136
अध्याय – 6 :	जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में नव्य-साहित्य-शिल्प	137 - 161
अध्याय – 7 :	समापन	162 - 169

- - -

जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में परम्परा और आधुनिकता

अनुक्रमणिका

अध्याय – 1 – **परम्परा और आधुनिकता –**

भूमिका, परम्परा : अर्थबोध और अर्थ विस्तार, परम्परा : स्वरूप-निर्धारण (अ) परम्परा और अतित (आ) परम्परा और सम्प्रदाय (इ) परम्परा और रूढिप्रियता (ई) परम्परा और अंधश्रद्धा, आधुनिकता: अर्थबोध और अर्थविस्तार, आधुनिकता : स्वरूप-निर्धारण ((अ) आधुनिकता और इतिहास – बोध (आ) आधुनिकता और यथार्थ (इ) आधुनिकता और मूल्य दृष्टि (ई) आधुनिकता और समसामायिकता), परम्परा और आधुनिकता : पारस्परिक सम्बन्ध, साहित्य में परम्परा और आधुनिकता

अध्याय – 2 – **जगदीशचन्द्र माथुर : जीवनी, व्यक्तित्व और कृतित्व**

जीवन वृत्त – पारिवारिक पृष्ठभूमि, माता-पिता, माथुरजी का जन्म तथा बचपन, संस्कार और शिक्षा-दीक्षा, घरेलू वातावरण, कला की रूचि, साहित्यिक क्षेत्र में पदर्पण, साहित्यिक क्षेत्र, साहित्यिक व्यक्तित्व, कार्यक्षेत्र, साहित्य सम्पदा, 1) एकांकी और लघु नाटक 2) नाटक साहित्य 3) अन्य साहित्य 4) अन्य प्रकाशित लेख

अध्याय – 3 – **जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में प्रतिबिम्बित "परम्परा"**

भूमिका अ) सामाजिक परिप्रेक्ष्य 1) दमित श्रमिक शिल्पी 2) साम्प्रदायिक संघर्ष 3) वर्णाश्रम व्यवस्था 4) अधूरे बल्कि अटूट प्रेमसम्बन्ध 5) जीवन का प्रतिरूप : कला आ) राजनीतिक परिप्रेक्ष्य 1) अत्याचार और षड्यन्त्र 2) कूटनीति और विश्वासघात 3) राजाओं की विलासिता 4) वर्णव्यवस्था और राजा का चुनाव 5) रामजाज्याभिषेक इ) आर्थिक परिप्रेक्ष्य ई) धार्मिक परिप्रेक्ष्य, आचार नीति, निष्कर्ष

अध्याय – 4 – **जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में मिथकीय नूतन उद्भावनाएँ**

भूमिका, मिथक अर्थबोध और अर्थविस्तार, मिथक की अवधारणा मिथक और साहित्य, मिथक और नाटक मिथक औरजगदीशचन्द्र माथुरजी के नाटक, निष्कर्ष

अध्याय – 5 – जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में प्रगतिशील चिन्तन और लोक-जीवन की नयी व्याख्या

भूमिका, माथुरजी के नाटकों में प्रगतिशील चिंतन एवं लोक-जीवन अ) सामाजिक परिप्रेक्ष्य 1) प्रचलित समाज व्यवस्था के प्रति असंतोष और एकता का प्रयास 2) कलाकार के जीवन का आधार क) पुरूषार्थ ख) क्षतिपूर्ति 3) प्रेम सबंध के नये आयाम आ) राजनीतिक परिप्रेक्ष्य 1) राजा का चुनाव 2) राजनैतिक सौदबाजी 3) राजनैतिक अत्याचार और उसका विरोध 4) पार्टीबाजी और दलबन्दी 5)राजनीतिक भाषण और नारबाजी इ) आर्थिक परिप्रेक्ष्य 1) मजदूर संगठन का प्रयास 2) आर्थिक शोषण से मुक्ति 3) जमीदारी और भ्रष्टाचार का रहस्य 4) सामूहिक श्रम की सार्थकता ई) धार्मिक परिप्रेक्ष्य 1) परम्परागत अंधश्रद्धा और अंधरूढियो का विरोध 2) धर्म निरपेक्षता और साम्प्रदायिक एकता, लोकजीवन की नयी व्याख्या 1) नव कलाकार : सर्वहारा वर्ग का प्रतिनिधि 2) सफल जीवन के लिए कलाकार का आधार 3) जन-जीवन की समृद्धि के लिए सामूहिक श्रम निष्कर्ष

अध्याय – 6 – जगदीशचन्द्र माथुर के नाटकों में नव्य-नाट्य-शिल्प

1) "सूत्रधार और नटी" के नव्य प्रयोग

2) "सूत्रधार और नटी" के अन्य नव्य प्रयाग

3) "आधुनिक अन्योक्ति" का मंचीय रूप "पहला राजा"

4) प्रतीक पात्र और खण्डित व्यक्तित्व अंकन

5) भाषा और संवाद के नव्य प्रयोग

6) रंगमंच के नये आयाम

निष्कर्ष

अध्याय – 7 – समापन